डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 23.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 32)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा।...
..... गदगद गिरा गभीर।।"

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित रामचरितमानस के बालकाण्ड से उद्धृत है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्येतिहास में भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति-शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रस्तुत प्रसंग श्रीराम-विवाह की पृष्ठभूमि है। रामचरितमानस के बालकाण्ड में दोहा संख्या 211 तक में अहल्या के उद्धार की कथा वर्णित हुई है। उसके बाद श्रीराम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ जनकपुर की ओर

यात्रा करते हैं, जिसका काव्यात्मक वर्णन दोहा संख्या 212 के अंतर्गत लिखित चौपाइयों से आरंभ होता है। प्रस्तुत चौपाइयाँ दोहा संख्या 215 के अंतर्गत हैं।

प्रस्तुत प्रसंग महामुनि विश्वामित्र के आगमन पर श्रेष्ठ जन सहित राजर्षि जनक के उनके पास पहुँचने के बाद का है। राजा ने मुनि के चरणों पर मस्तक रखकर प्रणाम किया। मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। फिर सारी ब्राह्मण मंडली को आदर सहित प्रणाम किया और अपना बड़ा भाग्य समझकर राजा (राजर्षि जनक) आनंदित हुए। बार-बार कुशल-प्रश्न करके विश्वामित्र जी ने राजा को बैठाया। उसी समय दोनों भाई (राम और लक्ष्मण) आ पहुँचे जो फुलवारी देखने गये थे। सुकुमार, किशोरावस्था वाले श्याम और गौर वर्ण के दोनों कुमार नेत्रों को सुख देने वाले और सारे विश्व के चित्त को चुराने वाले हैं। जब रघुनाथ जी आये तब सभी (उनके रूप एवं तेज से प्रभावित होकर) उठकर खड़े हो गये। विश्वामित्र जी ने उनको अपने पास बैठा लिया। दोनों भाइयों को देखकर सभी सुखी हुए। सबके नेत्रों में जल भर आया (आनंद और प्रेम के आँसू उमड़ पड़े) और शरीर रोमांचित हो उठे। श्रीराम की मधुर मनोहर मूर्ति को देखकर विदेहराज जनक विशेष रूप से विदेह (अर्थात् देह की सुध बुध से रहित) हो गये। मन को प्रेम में मग्न जानकर राजा जनक ने विवेक का आश्रय लेकर धैर्य धारण किया और मुनि के चरणों में सिर झुकाकर गदगद (प्रेमपूर्ण) गंभीर वाणी से कहा--।

इस प्रकार इन चौपाइयों एवं दोहे में कवि ने महर्षि विश्वामित्र की महत्ता तथा राजर्षि जनक की ऋषियों के प्रति श्रद्धा दर्शाने के साथ-साथ श्रीराम और लक्ष्मण की अतिशय मनमोहक छवि भी कलात्मक रूप से संकेतित कर दी है जो कि आगे की घटनाओं के लिए पृष्ठभूमि स्वरूप है।